ISSN No. 2349-4654
नाद - नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूज़िक वर्ष : 1, अंक : 2, दिसम्बर 2014

संगीत द्वारा समाज में एकता की भावना का विकास

प्रोफेसर शर्मिला टेलर
वनस्थली विद्यापीठ, संगीत विभाग, वनस्थली, राजस्थान

नेहा भट्ट
शोधार्थी, संगीत विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

सार-संक्षेप

कला एक ऐसा माध्यम है जो व्यक्ति और समाज को प्रभावित करने की क्षमता रखता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा संगीत उसका चिरसंगी है। संगीत से मनुष्य का घनिष्ठ सम्बन्ध होने के कारण संगीत कला समाज में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। प्रकृति से जन्मी संगीत कला पर किसी एक जाति, वर्ग अथवा धर्म का अधिकार हो ही नहीं सकता। संगीत ने सदैव से ही समाज में एकता की भावना का विकास करने का प्रयास किया है। साम्प्रदायिक एकता संगीत में पूर्ण रूप से दिखाई देती है। संगीत सम्मेलनों में प्राय: यह देखने में आता है कि कला-मंच पर हिंदू गायक, मुसलमान, सारंगी-वादक तथा तबला-वादक इत्यादि विभिन्न धर्म के संगीतज्ञ स्वर और लय का रसास्वादन करते है और उनके सामने बैठे सभी वर्गों के श्रोता मंत्रमुग्ध होकर एकता के सूत्र में निबद्ध हो जाते हैं। संगीत समाज व्यवस्था के चरित्र से जुड़ी वह कला है जो समस्त समाज के आंतरिक स्वरूप को एक ही प्रकार से प्रकट करती है। समाज की साम्प्रदायिक एकता का स्वरूप संगीत में पूर्ण से परिलक्षित होता है।

शोध-पत्र

संगीत में एकता का गुण विद्यमान है। जिस प्रकार हमारी संस्कृति शान्त, गम्भीर व मानव कल्याण, सद्भावना आदि से परिपूर्ण है उसी प्रकार हमारा संगीत भी इन्हीं गुणों से ओतप्रोत हैं। अनेक प्रकार के समूह गान, वृन्द वाद्य तथा समूह नृत्यों आदि विद्यालयों व अन्य औपचारिक व अनौपचारिक स्थलों पर सिखाएं जाने से एकता व परस्पर सहानुभूति की भावना विकसित होती हैं देश भक्ति व सांस्कृतिक लोक गीत आदि को सामूहिक रूप से सीखने से व्यक्तियों में धर्म, भाषा, जाति आदि के भेदभाव कभी प्रस्फुटित ही नहीं होते और यदि हों तो स्वत: समाप्त हो जाते हैं। इसी के साथ ही व्यक्तियों में सामाजिक एकता व एकता की भावना जागृत होती है।

प्रो. सुमति मुटाटकर लिखती हैं—

'स्वर और लय अपने आप ही हृदयगम हो जाते हैं। इनकी अनुभूति के लिए भाषा, धर्म या और किसी वस्तु की रुकावट नहीं होती है'।[1]

स्वर तथा लय अर्थात् संगीत किसी जाति, धर्म, भाषा अथवा भौगोलिक दूरी को नहीं मानता। सभी धर्मों भाषाओं व जातियाँ आदि में काव्य भले ही भिन्न हो जाए परन्तु उस गीत की आत्मा अर्थात् संगीत एक ही रहेगा। इस प्रकार संगीत समाज में रहने वाले सभी व्यक्तियों में राष्ट्रीय एवम् अन्तर्राष्ट्रीय एकता व परस्पर सहानुभूति की भावना को जागृत करता है।

संगीत के माध्यम से समस्त विश्व में मानवता, आत्मीयता और ऐक्य की स्थापना की जा सकती है। संगीत में विविधता में एकता हमेशा देखने को मिलती है। एक घराने के गायन अथवा गुरु के शिष्य आर्थात् एक ही गायन, वादन शैली से सम्बंधित कलाकार एक ही राग को भिन्न-भिन्न तरीके से प्रस्तुत कर उसमें विविधता दिखाने की कोशिश करते है परन्तु फिर भी एकरूपता उसमें हमेशा बनी रहती है। संगीत में ऐसे अनेक उदाहरण मिलेंगे, जहां हिन्दु गुरुओं के मुसलमान शिष्य और मुसलमान गुरुओं के हिन्दू शिष्य हुए हैं। संगीत-सम्मेलनों में पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के गायक सम्मिलित हो कर एक-दूसरे से मैत्रीपूर्ण भाव से मिलते हैं और बिना किसी सांस्कृतिक और धार्मिक भेदभाव के एक ही मंच पर बैठकर एक साथ देवी सरस्वती की आराधना किया करते हैं। संगीत सम्मेलन में प्राय: यह देखने में आता है कि मंच पर हिन्दुस्तानी गायक, मुसलमान सारंगी वादक, बंगाली तबला-वादक इत्यादि विभिन्न धर्मों और जातियों के संगीतज्ञ स्वर एवं लय का एक साथ रसास्वादन करते हैं। इसी प्रकार प्रेक्षागण में उपस्थित सभी धर्मों और जातियों के श्रोतागण रागों को सुनते समय विस्मित, वशीभूत और मंत्र-मुग्ध होकर वैश्विक एकता के सूत्र में बंध जाते हैं। ऐसा चमत्कार केवल संगीत कला की समन्वयकारिणी शक्ति के कारण ही सम्भव हो पाता है।

'श्री गुलाम अली खां के शब्दों में'

''संगीत इंसान का ईजाद किया हुआ हुनर नहीं है। यह तो देवताओं का प्रताप एवं सरस्वती की देन है। शायद लोगों को यकीन न आए, क्योंकि हम ठहरे मुसलमान, किन्तु हिन्दू मुसलमान से क्या होता है, बन्दे सभी उस परवदिगार के है।''[2]

संगीत के क्षेत्र में एकता सर्वाधिक दिखायी देती है। किसी भी संगीत कार्यक्रम में उपस्थित सभी श्रोताओं को धार्मिक और जातीय बंधनो से मुक्त एक ही लय में झूमते हैं और प्रस्तुत की जा रही कला की प्रशंसा एक समान भाव से करते हैं।

'यदि जीवन को संगीतमय बनाया जाय तो भावात्मक एकता आयेगी

अर्थात् यह भावात्मक एकता संगीत से प्रत्यक्ष रूप में नहीं वरन् अप्रत्यक्ष रूप से होगी। भावात्मक एकता की प्रेरणा संगीत से जरूर प्राप्त होगी। इसीलिये संगीत को जीवन में स्थान प्राप्त होना चाहिए। संगीत नारद की वीणा है, जो भेदभाव को नहीं मानती। वह सार्वधिक तथा सार्वभौमिक है। सामाजिक एकता में जो विघ्न आते हैं, उसे दूर करने को संगीत उपयुक्त बन सकता है।'[3]

आकाशवाणी और फिल्मों में संगीत के माध्यम से सभी वर्गो के लोगों को एक बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है। एकता पर कई गीतों की रचना की गई है, जिन्हें आकाशवाणी तथा फिल्म के अच्छे-अच्छे कलाकारों द्वारा इनका प्रयोग किया गया है। मुहम्मद रफी द्वारा एकता पर गाया हुआ गीत 'आवाज दो हम एक है' भारतवर्ष के करोड़ो लोगों को एकता की ओर ले जाने का अत्यंत प्रभावी एवं मनोवैज्ञानिक माध्यम है। वास्तव में संगीत में ही समस्त मानव व समाज को एकता के सूत्र में बांधने की महान शक्ति है। संगीत के माध्यम से जब भू-लोक और देवलोक, परमात्मा और आत्मा तथा भगवान और भक्त के मध्य सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है, तो विभिन्न जातियाँ, सम्प्रदायों राष्ट्रों और धर्मों में मैत्रीपूर्ण एवं सद्भावना मुक्त सम्बंध स्थापित करना नि:संदेह ही श्रमसाध्य है, परंतु नामुमकिन नहीं।

वृंदगान अथावा समूह गान कलात्मक एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति, मानवीय मूल्यों को समृद्ध करने को अत्यंत सशक्त माध्यम है। एक बहुत बड़े जन समुदाय एवं वर्ग का इस प्रकार के आयोजनों में सक्रिय सहयोग रहता है। सामूहिक रूप से गाए गए देशभक्ति गीत, राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने के साथ-साथ राष्ट्र के प्रति अभिमान की चेतना को जागृत करने के साथ-साथ राष्ट्र के प्रति अभिमान की भावना को दृढ़ करते हैं।

'वृन्दगान भारतीय संस्कृति के ऐसे सूत्र हैं जो एकता एवं सहयोग की भावना से ओत-प्रोत हैं। भाषा, प्रान्त अथवा वेषभूशा की संकीर्णता से कहीं दूर समूह गान राष्ट्रीय एकता और सद्भावना के प्रतीक है। संगीत की यह विधा जनमानस में अनायास ही राष्ट्रीय चेतना के अंकुर प्रस्फुटित करती है।'[4]

संगीत का प्रभाव सम्पूर्ण मानव जाति के साथ-साथ पशु-पक्षी, जड-चेतन आदि पर भी पड़ता है।

''पशु शिशुर्मृगो वादि नादेन परितुष्यति
अतो नादस्य माहात्म्यं व्याख्यातुं केन शक्यते''[5]

चाहे कोई भी कला हो एक ओर तो उससे हमें अलौकिक आनन्द की अनुभूति होती है। दूसरी ओर वह हमारी संकुचित भावनाओं को समाप्त कर हमारी भावनाओं को उदात्त बनाती है। संगीत सभी कलाओं के अन्तर्गत एक विश्वव्यापक कला है जो देश और भाषा, प्रदेश की सभी सीमाओं को समाप्त कर देती है। जो संगीत मानव तथा पशु के भेद को समाप्त कर देती है वह किसी भी समाज में रहने वाले मानव से मानव के बीच की दूरी समाप्त कर उनमें एकता की भावना का संचार कर समाज कल्याण में सहायक है।

'इन कलाकारों में जाति धर्म का लेशमात्र भी विचार नहीं होता। इसी प्रकार ''रख इमाम ए रे सुजान तवु साईं करीम, रहीम, हकीम पाक परवर दिगार'' करीम रहीम वन्दे नवाज पाक परवर दिगार, महबूब निजामुद्दीन आया रे, आदि को हिन्दू कलाकार इन रचनाओं के सौन्दर्य को प्रीतिभाव एवं कुशलता से अभिव्यक्त करते हैं। इस प्रकार मुसलमान रामायण गायें या हिन्दू रहीम, अल्लाह क्योकि संगीत के अन्तर्गत सभी एक धर्म के उपासक होते है और वह धर्म होता है संगीत।[6]

संगीत में किसी भी भेद-भाव अथवा ऊँच-नीच का कोई स्थान नहीं। संगीत सर्वत्र व्याप्त है तथा सबकी भाषा है।

संगीत एक ऐसी कला है जिसमें सभी धर्म, जाति, भाषा के लोग इन सीमाओं को लांघकर संगीत में एक चित्त एक समाधि हो जाते हैं। इस प्रकार संगीत अनायास ही एकता की भावना को सुदृढ़ करता है। इसका मुख्य कारण है कि संगीत सभी के मन मस्तिष्क पर एक गहरा एवं चिर-स्थायी प्रभाव डालता है। यही कारण है कि देशभक्त सभी स्वार्थो को त्याग देश की अखण्डता एवं एकता के लिए अपने प्राणों तक की बलि देता है।

संगीत के अन्तर्गत किसी भी अंग (गायन, वादन, नृत्य) को प्रस्तुत करने के लिए योग्य साथ की आवश्यकता होती है। संगत करने वाला व्यक्ति कौन सी जाति, धर्म का है अथवा उसकी भाषा क्या है, इसकी ओर कोई ध्यान नहीं देता। वे सब कलाकार तो एक साथ संगीत में डूबकर स्वयं अपने आप को भूल जाते हैं और जब उनकी तादात्मयता चरम सीमा पर पहुंच जाती है तो वे ईश्वर के अस्तित्व का प्रत्यक्ष दर्शन कर लेते हैं। वे अपनी जाति, भाषा, धर्म आदि की सीमाओं से ऊपर उठकर संगीत के माध्यम से एकता के लिए अनेक कार्य करते हैं।

''संगीत रूपी वृक्ष की छाया में आकर किसी भी व्यक्ति के जाति-पाति, ऊँच-नीच आदि भेद-भाव स्मरण ही नहीं रहता। प्रसिद्ध संगीतज्ञ मनहर बर्वे ने लिखा है—

'Music is the only act and gaeatest power which makes the unity of all human castes''[7]

सामाजिक तनाव के रूपों में जातीय तनाव से आज भारतीय समाज त्रस्त है। जाति के नाम पर सामाजिक विभाजन बहुत जबरदस्त है। उच्च जातियों और पिछड़ी जातियों के बीच होने वाले झगढ़े जातीय दंगे और जातीय नरसंहार में बदलते रहे है। ऐसे में संगीत ही एकमात्र ऐसा साधन है जिसके द्वारा व्यक्ति में जातिगत भेदभावों को भूलकर आपसी मैत्रता व एकता की भावना जागृत होती है।

संगीत से एकता की भावना आती है। क्योंकि सामूहिक रूप से गति समय गायक अपने आपको विस्मत कर देते है। भक्ति संगीत में वैराग्य की भावना भी जागृत होती है।

व्यक्ति का व्यक्ति से सम्बन्ध होना समाज के लिए अत्यन्त आवश्यक

है। अत: यह सम्बंध सामूहिक गीतों के द्वारा कायम किया जाता है। संगीत के द्वारा समाज में एकता, प्रेम की भावना तथा बंधुत्व की भावना जागृत होती है तथा भेद, अभेद, कटुता आदि कम होते हैं।

निष्कर्ष

संगीत विश्व की भाषा है। इसमें लोक कल्याण और समाज के नैतिक उत्थान की अपार शक्ति निहित है। संगीत परमात्मा के आशीर्वाद के रूप में मनुष्य को मिला है। संगीत का आनन्द, वायु, जल, सूर्य की सत्ता की तरह उन्मुक्त रूप से हर कोई प्राप्त कर सकता है। संगीत के द्वारा हर मानव में एकता की भावना का विकास होता है। इसी कारण संगीत को वैश्विक कहा गया है। संगीत विश्व की भाषा है। विश्व-बंधुत्व एवं मानव कल्याण के लिए यह एक प्रभावशाली माध्यम है। संगीत जगत् में समय-समय पर बड़े-बड़े संगीत-सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है। इन सम्मेलनों में अनेकों गायक व वादक अपने संगीत एवं उसकी सांस्कृतिक गरिमा के प्रकाशन हेतु एकत्र होते हैं इससे उनमें परस्पर मैत्री भाव की वृद्धि होती है। वे लोग एक-दूसरे के सम्पर्क में आते है। और संगीत के विविध सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त करते हैं इस प्रकार उन लोगों में सहयोग और अपनत्व की मंगलमय भावना का विकास होता है। अत: निष्कर्षत: हम कह सकते है कि संगीत ही एक मात्र ऐसी कला है जिसके द्वारा एकता की भावना व विश्वबन्धुत्व की भावना का विकास होता है।

पाद-टिप्पणियाँ

1. संगीत कला विहार, जनवरी 1986, पृष्ठ 5
2. बोग्रलान अली खाँ, उद्धृत: दीपिका वालिया, संगीत कला के विविध आयाम, पृ. 44
3. कुलकर्णी, वसुधा, भारतीय संगीत एवं मनोविज्ञान, पृ. 93
4. शर्मा, मनोरमा, संगीत विविधा, पृ. 141
5. मिश्रा, जया, वर्तमान सामाजिक परिवर्तन में संगीत की नई भूमिका पृ. 31
6. वही, पृ. 190
7. बर्वे, मनहर उद्धृत : जया मिश्रा, वर्तमान सामाजिक परिवर्तन में संगीत की नई भूमिका, पृ. 195

संदर्भ ग्रंथ सूची

वालिया, दीपिका, प्रथम संस्करण-2012, संगीत कला के विविध आयाम, संजय प्रकाशन (नई दिल्ली)

कुलकर्णी, वसुधा, प्रथम संस्करण 2004, भारतीय संगीत एवं मनोविज्ञान, राजस्थानी ग्रन्थागार प्रकाशन

शर्मा, मनोरमा, प्रथम संस्करण 2008, संगीत विविधा, अभिषेक पब्लिकेशन्स (चण्डीगढ़)

मिश्रा, जया, प्रथम संस्करण 2012, वर्तमान सामाजिक परिवर्तन में संगीत की नई भूमिका, अनुभव पब्लिशिंग हाउस (इलाहाबाद)

संगीत कला विहार, जनवरी 1986